Dr. Sunil kr. Suman
Assistant Professor (Guest)
Deptt. of Psychology
D.B. College Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study material
B.A. Part-II
Paper-IV
Date:-26-8-20
Do-Next-class

Structuralism

Contribution of Titchener

(4) सम्बन्ध के नियम (Principle of connection)

यह सही है कि टिचेनर ने साहचर्य या सम्बन्ध के नियम को संरचनावाद में अधिक महत्व नहीं दिये हैं। फिर भी वे समीप्यता के नियम (Law of contiguity) को संवेदनों एवं प्रतिमाओं के साहचर्य (association) के लिए महत्वपूर्ण माना है। टिचेनर ने भाव को अनुभूति का स्वतंत्र तत्व (Independent Element) के रूप में नहीं माना। उन्होंने यह स्पष्टत: कहा कि जब भी चेतन अनुभूति में संवेदी या प्रतिमा रूपी (imaginal) तत्व उत्पन्न होते हैं तो साथ ही साथ वे सभी संवेदी प्रतिमारूपी तत्व भी उपस्थित हो जाते हैं जो उस संवेदी प्रतिमारूपी तत्व के समीप्य (contiguous) रह चुके हैं। इस तरह टिचेनर के लिए समीप्यता का नियम (Law of contiguity) साहचर्य का एक मौलिक नियम है। टिचेनर ने यह भी स्पष्ट किया है कि चेतन के जो भिन्न-भिन्न तत्व होते हैं, वे आपस में अंशछादित (overlap) रहते हैं तथा एक दूसरे से परिवर्तित भी करते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि उनके संश्लेषण (Synthesis) में कठिनाई उत्पन्न हो जाती है। इस तरह टिचेनर वुण्ट के समान एक स्थैतिक तत्ववादी (Static elementalist) नहीं थे। वुण्ट के अनुसार चेतन अनुभूति के तत्व स्थैतिक (Static) होते हैं, और भौतिक वस्तुओं का गुण उनमें पाया जाता है। परन्तु टिचेनर उसे नहीं मानते थे और संश्लेषण के नियम (Law of synthesis) को काफी महत्व दिया।

सम्बन्ध के नियम के सहारे टिचेनर ने अर्थ (meaning) की समस्या की व्याख्या करने का सफल प्रयास किया है। समस्या यह थी की संवेदन और प्रतिमा के साथ अर्थ (meaning) किस तरह संबंधित हो जाता है? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए 1912 में टिचेनर अर्थ का सन्दर्भ सिद्धान्त (context theory of meaning) का प्रतिपादन किया इस सिद्धान्त पर वुण्ट ने भी हल्का फुल्का विचार व्यक्त किया था परन्तु उसकी वैज्ञानिक व्याख्या टिचेनर द्वारा ही की गयी। टिचेनर ने इस सिद्धान्त के अनुसार संवेदन या प्रतिमा का अर्थ उस संदर्भ द्वारा निर्धारित होता है जिसमें वह चेतन में उत्पन्न होता। संवेदन एवं प्रतिमाओं के समूह से संबंधित प्रक्रियाओं के सीमांत (fringe) को संदर्भ कहा जाता है। संवेदन संदर्भगत संवेदनों के साथ हुई अनुभूति के कारण तैयार होता है। एक सरल संवेदन (simple sensation) का कोई अर्थ नहीं होता है क्योंकि इसमें सिर्फ तात्कालिक अपरिष्कृत अनुभूति (immediate raw experience) होता है जिसका कोई अर्थ नहीं होता है। प्रत्यक्षण तथा विचार (idea) जो सरल संवेदन (simple sensation) तथा प्रतिमा (image) से अधिक जटिल होता है, में सारभाग (core) तथा (context) दोनों ही होते हैं। संदर्भ के सारभाग में अर्थ उत्पन्न हो जाता है। इसलिए प्रत्यक्षण एवं विचार अर्थपूर्ण होते हैं। कुछ हालातों में संदर्भ (context) सारभाग (core) से अलग होता है। जैसे- जब व्यक्ति किसी शब्द को बार-बार दोहराता है जबतक की उसका संदर्भ (context) से ध्यान नहीं जाए, तो ऐसी परिस्थिति में शब्द अर्थहीन हो जाता है। इस उदाहरण में सारभाग (core) का सन्दर्भ में समय के ख्याल से अन्तर है। इससे स्पष्ट हुआ की सारभाग (core) का तात्कालिक अपरिष्कृत अनुभूति (immediate raw experiences) होता है जबकि संदर्भ साहचर्यित तत्व (associate elements) होते हैं जो परोक्ष संवेदन के रूप में अनुभव किये जाते हैं।

Next class

Scanned with CamScanner